International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

गो वंद मश्र के कथा साहित्य में मानवीय संबंध:

डॉ पूर्ण मल वर्मा
सह आचार्य,
राजकीय महा वद्यालय टोंक (राजस्थान)

हिन्दी उपन्यास कहानी व अन्य क्षेत्रों में मूल्यों को लेकर कथ्य भाषा बिम्ब प्रतीक उद्देश्य शल्प शैली व मानवीय संबंधों और नैतिक मूल्य की चर्चा की है। जिसमें परिवार समाज राजनीति दांपत्य जीवन में नैतिकता का गरता हुआ समीकरण यथार्थ घटनाओं को प्रस्तुत करता ह।आज के आधुनिक और नवीन भूमंडलीकरण में दू षत शक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण युवा भटक रहा है।पुराने आदर्श नैतिक मान्यताओं को ध्वस्त कया जा रहा है।१९८३में ल खत कहानियों का समय था जब कम्युनिस्ट देशों में रूस और कम्युनिस्ट शासन का आतंक था। वष्णु प्रभाकर जी ने लखा है क इतिहास को प्यार और उसकी पीड़ा की रेशल अनुभूति है। लौटते में वह इधर से फर गुजरेगी अपने जो जगह हमारे कीमती क्षणों में जुड़ी हूं वही उजड़ कर फर से खड़े होना मैं सहर उठा मैं भी सहर उठा था। आने की चर्चा करें तो यह एक गांव की अनपढ़ महिला की कहानी है जिसका निश्चल प्रेम घर में घुसे चोरों की सीडी इधर शर्डी दोस्त करता चला जाता है आ खरी में

जो चुराकर कुछ ले जाने के लए आए थे उनके लड़के को अपनी जेब से देकर जाते हैं। स्वर्णांज ल धर्म में प्रका शत हुई थी जिसमें शैलेश मटियानी ने इसके कहानी को कफ़न के समक्ष रखा। कहानी पर उनका वस्तृत लेख और एक पत्र भी डॉक्टर चंद्रकांत द्वारा संपादित है।कहानी समग्र भाग-1 की कहानियों में महकता अं धयारा,रोता हुआ ख्वाब,उड़ते तेज,बहकी बातें,चौखट ए हाजिरी, चलमन दुआ, उपे क्षत,झप ा, चीटियां, अंतः पुर, कच्छ कौन,अपाहिज,गलत नंबर,जनतंत्र पढ़ाओ गरे आदि जो कहानियां लखी है।इन कहानियों के माध्यम से परिवार समाज और संस्कृति को प्रमुख संस्था के रुप में मान्यता मली है। इन्होने सभी कहानियों मे मध्यम वर्गीय मान सकता से ग्र सत मानवीय संवेदना को यथार्थ स्वीकृति प्रदान की ।इनकी कहानी व उपन्यासों में सामाजिक पारिवारिक जीवन में होने वाली टकराहट को लेकर कथ्य को नवीन स्वरूप में प्रस्तुत कया है। द् वतीय भाग में उन सब कहानियों में पारिवारिक सामाजिक एवं व भन्न प्रकार की संवेदना ओं की अ भव्यक्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर है जो भारतीय परिवार के लए व वध प्रकार की संवेदनाएं से सरोकार रखने की बात कही हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

वर्तमान समय में रिलेशन शप बनाकर मर्यादित भावना,पति पत्नी संबंध में होने वाली वैचारिक भन्नता पारिवारिक संवेदना में परिवर्तन दांपत्य जीवन एवं वृद्धावस्था को आधुनिकता से जोड़ने वाली कहानियां और उपन्यास लखे हैं।हमारे ज्ञान के आधार पौरा णक ग्रंथ एवं अध्यात्मिक क्षेत्र से धीरे-धीरे अलग होते जा रहे है। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करते हुए वह मानववाद को छोड़कर भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है।अपने कर्तव्य बोध से परे होकर नैतिकता व मूल्यों के पतन की ओर बढ़ रहा है।आज के द कयानूसी क समाज को गर्त की ओर ले जा रहे है। जिससे समाज को आगे बढ़ाने वह उत्तरोत्तर वृ द्ध की जहां संभावनाएं व्यक्त की जाती है वहां युवा आज खा मयों से गुजरता समाज को स्तर हीन करता जा रहा है।साहित्यकार मश्र जी ने अपने संपूर्ण कथा साहित्य में मूल्यों को चुनौती देते हुएआपस में जोड़कर मानव मूल्य रिश्ते आपसी संबंध एवं वचारों का संप्रेषण निम्न बिंदुओं के आधार पर कया है।

१ पति-पत्नी सम्बंन्ध:------यह सर्व वदित है क पौरा णक काल से लेकर आज तक निरंतर समाज में सबसे महत्वपूर्ण चतुर वर्ग(धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) में उत्तम एवं सृष्टि के संचालन में महती भू मका निभाता है वह है पति पत्नी संबंध या दांपत्य संबंध कह सकते हैं। हमारे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

यहां की परंपरा एवं आदर्श नियम है पति और पत्नी का रिश्ता अहं होता है। यदि यह रिश्ता मजबूत नहीं होता है तो गृहस्थी जीवन नारकीय हो जाता है। इस जीवन को समृद्ध करने के लए दांपत्य जीवन को कई सामाजिक मर्यादाओं से गुजरना होता है तथा परिवारजनों समाज देश एवं सृष्टि के हर पहलू को समझना और उसकी अनुपालना करना आवश्यक माना गया है। जैसे ही ब्रह्मचर्य को पार कर और जब गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है तो उसको कई प्रकार के बंधनों से गुजरना होता है। उसे जीवन के व भन्न माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों में फर्क केवल जनरेशन का मानना है। उन्होंने मेंटली नई जनरेशन और राष्ट्रीय जीवन जीने वाले आने वाली नस्ल के दिमाग की बात कही है। स्त्री-पुरुष संबंधों में कस प्रकार का औपचारिकता का व्यवहार रहता है वह दर्शाया है। आपकी वजह से मैं क्यों"अच्छा मैं कल अब जा रही हूं आप तो चलेंगे नहीं बहुत थके हैं शायद कोई बात नहीं खाने के लए इंतजार न करिएगा। हां दे खए! जरा बच्चों को दूध पला दीजिएगा क्या कर रहे हो लेटे हो बच्चों के साथ? श्रीमती क्या कहीं बाहर गई है? तुम जाकर शराब क्यों नहीं पीते धमकी देते थे ना क मेरी शादी के बाद तुम देवदास बन जाओगे यहां पड़े क्या कर रहे हो जाओ कसी बार में तुम भी पैक छलकाओ।१औद्यो गकरण वैश्वीकरण की चलती दुनिया में स्त्री पुरुष संबंध की प्रीति इस प्रकार पहुंच गई है क आज एक दूसरे की

बिना परवाह कए हुए अपनी गृहस्थी को जी रहे हैं।एक और धर्मपत्नी दूसरी और माता पता की सेवा।यह हमारे संस्कृति के संस्कार हैं जिन संस्कारों की हमे पालना करनी होती है। हमारे षोडश संस्कार पत्र कर्म श्राद्ध कर्म ऋण आदि को सेवा से ही संपन्न कया जा सकता है।समाज की स्थापना करने में दांपत्य जीवन का वशेष महत्व रहता है।यदि दांपत्य जीवन सुखी है,माता और पता मल करके और संतान को अच्छे मार्ग की ओर अग्रसर करते है तो भावी पीढ़ी भी उन्नत होती है। तथा आज्ञाकारी होती है। हमारे समाज में व्यस्त जीवन के लए श्रीरामचरितमानस का अध्ययन अध्यापन मंगल कामना एवं व शष्ट संतानोत्पत्ति के कई मार्ग दिखाती है। कथाकार मश्र जी के सभी साहित्य का यदि वश्लेषणात्मक अध्ययन कया जाए तो निष्कर्ष पर पहुंचते हैं क उन्होंने परिवार और समाज दोनों पर पर्याप्त लखा है। तथा समकालीन परिवेशगत चुनौतियों का अध्ययन करते हुए युवा भटकाव,उत्पीड़न,कुंठा,घुटन,

त्रासदी,वैमनस्य ओर ईर्ष्या आदि भावों की अ भव्यक्ति को सहज रूप में प्रस्तुत कया है।भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्टय,ऋणत्रय,सोलह संस्कार, चार आश्रम एवं गृहस्थी में दान पुण्य यज्ञ अनुष्ठान पुत्र संतान आदि की उत्पत्ति कारक क्रया-कलापों का वर्णन है। मनुस्मृति श्रीमद्

भागवत गीता श्री रामचरितमानस आदि ग्रंथों में सम्यक रूप से दृष्टिगोचर होता है।" उतरती धूप" सफल वैवाहिक जीवन का एक ज्वलंत उदाहरण है जो क मश्र जी ने अर वंद और 'वह' चरित्र के माध्यम से कथ्य चुना है और पारिवारिक संबंध सूत्र कस प्रकार उभर कर प्रेम की और समीप चले जाते हैं।सामान्य संवेदनाओं का हनन होता हुआ इस परिणति को प्राप्त करता है।'वह' और अर वंद का जो प्रेम है वह ववाह में बदलना चाहता है जो क सामाजिक रूढ़ियों के कारण ऐसा संभव नहीं हो पाता है।दे खए"क्यों क "उससे मारपीट कर शादी कर डालो जाए कहां जाएगी बाद में मां-बाप भी ठीक हो जाएंगे पर तब वह न रहेगी अपनी खुशी के लए उसने कतनों को ठेस पहुंचाई यही उसे जीने नहीं देगा।"२गृहस्थी जीवन रूपी पहिया की गाड़ी में दोनो का यदि बैलेंस सही है तो गृहस्थी भली-भांति चलती है।यदि एक पहिए का भी बैलेंस डग-मगा जाता है तो वह गृहस्थी रूपी गाड़ी खड्डे में गर जाती है,और सब बर्बाद हो जाता है। हमारी संस्कृति और संस्कारों में दांपत्य जीवन की खुशी के लए दोनों का एक साथ मलकर एक दूसरे को समझना, वचारों में एक दूसरे को बहलाना तथाक थत समाज में सबसे महत्वपूर्ण बात है।पशारीरिक मान सक और भौतिक सुखों में तथा मांग लक कार्यों में साथ रहने पर जीवन सफल हो जाता है।कुछ ऐसे वचार के लोग होते हैं या तो पुरुष वर्ग या स्त्री वर्ग के ववाहेत्तर संबंध या ववाह पुरष संबंध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

होते हैं, जिसके कारण दोनों एक दूसरे को शक की निगाह से देखते हैं।जिससे घर में सदैव कलह बना रहता है। इन सब के पीछे मानवीय सोच मानवीय संवेदना मानवीय नैतिक मूल्य का वशेष महत्व रहा है। अ धकांश स्त्रियां शारीरिक और मान सक तनाव सहती रहती हैं। पतियों द्वारा प्रता ड़त रहती हैं, कंतु पतियों से तलाक नहीं मांगती हैं। इस के पीछे सबसे बड़ा कारण है हमारे संस्कार मर्यादा तथा सामाजिक परम्परा प्रमुख कारण है।अर वंद 'वह' की स्थिति के बारे में सोचता रहता है तलाक तो नहीं क्यों क उसके साथ में सोचने का अंदाज में उसके पति में था ना उसमें था। कसी में भी नहीं था पर दिमागी स्तर पर अलग अलग होना भी तो संबंध वच्छेद है।यह रास्ता सर्फ औपचारिक अर्थ को छोड़ सब अर्थों में परिवर्तन की ओर ले जाने वाला है।३लाल पीली जमीन"उपन्यास में सामाजिक हिंसा के तले कई निर्णय कस्बाई परिवारों एवं पति पत्नियों युवा लड़ कयों के साथ होने वाली दुर्व्यवहार को प्रस्तुत कया है। चंद्रकांत वाडेकर लखते हैं "लाल पीली जमीन की लड़ कयां अपने यौवन को भोग नहीं सकती थी यह दर्दनाक तथ्य लगभग हर नारी प्रमा णत कर देती है"४परिवार कसी सदस्य की तस्वीर नहीं अभी तो बस्ती की आम परिवार का प्रयोग होती है। हिंसा की वजह से यहां बच्चों का भ वष्य अंधकार में है,क्यों क बस आंखों के सामने उनका परिवार रहता है। और लग रहा है उनका परिवार इसी तरह से बेबस है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

सुरेश खुलेआम बक्शी कह देता है" कसम तेरी लौं डया बड़ी खुशी आगे कोई खतरा नहीं सर्फ एक बार जी चाहता है।तुझे एक बार ही और तंग करूंगा तो तैयार हो जाएगी।"५ इस प्रकार पुरुष की कामवासना की पूर्ति के लए चाहे छोटी बच्ची हो बड़ी या मात्र समान हो।अपनी नीच हरकतों से बाज नहीं आता वह अपनी कामवासना का शकार बनाने की को शश करता है। "हुजूर दरबार"में सामंती व्यवस्था के दबाव में जीवन जीते परिवार की व्यथा को मश्र जी ने महाराजा प्रताप संह जी के माध्यम से प्रस्तुत कया है।सामंती परिवेश तथा राजगढ़ सरकार सरकारी सरकार और नेपाली सरकार के नाम से पुकारते हैं। इनके अलावा इसके अतिरिक्त अवैध संबंधों को भी दर्शाया गया है। रूद्र प्रताप और राधाबाई का प्रेम संबंध और उनका सुधा संबंध श्री राजा के पता और भीलनी के संबंध आदि मलते हैं। खानदानी राज शाही की लंपट का खून में प्रवाहित होने के कारण जिस स्त्री पर मन आ जाए उसे प्राप्त करके और उस दिन पास में रख कर भूल जाना राजघराने की अन्य जातियों के साथ संबंध रखना रूद्र प्रताप की लत है।६

राजा रानियों के यहां पति पत्नी संबंध अपेक्षाकृत कम रहता है। राजा प्रताप अपने सुख की बातें सर्फ अपनी छोटी पत्नि नेपाल सरकार से करते हैं।अकेलेपन का शकार होना और इसके साथ संबंध स्था पत

करती है। इस लए हरिद्वार मंदिर से नेपाल सरकार और उसकी निकटता के कारण मान सक तनावपूर्ण स्थिति रहती है। हरीश को साधारण के रूप में इस्तेमाल कया जाता है। "तुम्हारी रोशनी"शीर्षक उपन्यास में सुवर्णा, उसका पति रमेश और उसका दोस्त आनंद इन तीन के भीतर पूरी कथा घूमती है।वह दांपत्य जीवन के लए कोई खतरा महसूस नहीं करती,क्यों क वह अपनी सीमा रेखा भी तय कर सकती है।सब से उसकी सर्फ दोस्ती हो सकती हैं वह प्रेम भी नहीं महसूस कर पाती। ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में महिलाओं का प्रेम महसूस वक सत करना पति के साथ कठिन कार्य होता है।स्वर्णा सोचती थी क वह अपने पति रमेश से सबसे ज्यादा प्यार करती है,पर उसका रमेश से मोहभंग हो जाता है। चोर और पु लस के दाम पर संबंधों के उतार-चढ़ाव के बीच एक स्त्री के दर्द और आत्म वश्वास को दिखाते हुए दाम्पत्य संबंध में होने वाले मन मुकाबले के वचार प्रस्तुत कया है।नैतिकता अनैतिकता से भी रूबरू होते हैं। सोना मॉडर्न लड़की है अपने कार्यालय के जीवन के साथ-साथ वह परिवार का भी देखभाल करती है।रमेश से प्रेम करती है तथा उसकी पुष्पा से भी दोस्ती हो जाती है। साथ संबंध ववाहात्मक है मेरा नाम पर उछलता के प्रश्न नहीं देती है और उसको मारता है। सोना टूटती अपने अ धकारों के बारे में सोचती है उसे सुन करती है।भाषा की बड़ी संवेदना के साथ उपन्यास में बातों को बताया गया है।सोना के साथ अनंत होता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

है। जोशी समझाता नहीं सोना की को शश की आंतरिक सौंदर्य को पहचानता है। कार्यालय में काम करती हुई उस दोस्तों के साथ हाथ में हाथ डाल कर घूमना और अपने पति के सामने ही आनंद के साथ शराब पीने के लए जिद करती है क स्थिति बताई गई है "रमेश मुझे भी थोड़ी सी जगह थकी हूं।"ध्यहां पति पत्नी के रिश्ते में आने वाले संस्कारों एवं भारतीय आधुनिक स्त्री की पहचान को नई खोज या वचारों को सहज रूप से प्रस्तुत कया है। छोटी छोटी बातों से पति पत्नी में झगड़े होते हैं तो रमेश सुवर्णा को घर से लौटते समय कहता है मुझे लोगों से नहीं तुम से मतलब है तुम क्या कहती हो क्या सोचते हो तुम जानते हो क मैं सब औरतों की तरह नहीं हूं मेरा अपना व्यक्तित्व है। नारी अस्मिता से पी ड़त शो षत नहीं रहना चाहती है वंदन स्वीकार करना नहीं चाहती है सोना का रमेश को छोड़कर जाना कहीं ना कहीं भारतीय परिवार की छोटी ग्र सत मान सकता आधुनिक मूल्य संस्कारों से नि र्मत है। अपने परिवार के साथ समाज में भी होने लगती है। भारतीय परिवारों की अवधारणा के संबंध में वष्णु प्रभाकर ने लखा है क घर की सारी जिम्मेदारियां पत्नी संभाले बाजार करें दृष्टि चलाएं यहां तक क घर में खाना क्या? सजावट करना कौन पर्दे कहां?लगने यह भी वही देखे बच्चे स्कूल जाते हैं नहीं जाते पढ़ने में कैसे हैं? कमजोर हैं?तो क्या करना है यह सब टीवी देखें और वह चाय पीता हुआ हुकुम चला दे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

कसानों को समय से घर पर आना चाहिए रमेश घर में पैसा जाता है तो वह भी लाती है तो फर जिम्मेदारी बराबर क्यों नहीं?८प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से ववाह और नैतिकता के अंतर्संबंध को प्रस्तुत कया है।भारतीय समाज में ववाह एक संबंध का आधार नैतिकता है। पति-पत्नी को एक-दूसरे में वश्वास रखते हुए जीवन जीना होता है।सोना रमेश ववाहित है ले कन रमेश स्वर्णा को अपने हिसाब की छूट देना चाहता है।सुवर्णा को सोचना है क अपने बारे में बताया करेगी रमेश नहीं उपन्यास में दोस्तों पर दिखाया है।

पहला तो है क रमेश सोना कस नेता को स्वीकारता है भले ही कुंठित मन से और दूसरा जवानों पर हावी होना चाहता है।उसे मारता धमकी देता है दोनों को मलाकर देखें तो और क्या करेगा।अनंत सॉन्ग श्याम मोहन आदि से संबंध रखते हैं ले कन चंद्रकांत कहते हैं क"कुछ तीन इस दोस्ती में उसको मलती है।इस दिन तक वह दोस्ती की को सी मत रखती है क्यों क वह जानती है क कस सीमा तक बढ़ने देना है उसके बाद वह निर्मम होकर उसे काट कर फेंक देती है"।९ भारतीय परिवारों में दाम्पत्य संबंधों के परिवर्तन पर वचार करते हुए" त्यागपत्र" के बाद मश्र जी ने महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है।स्वर्णा के माध्यम से आज की स्त्री चरित्र के संबंध में दुख को बताया है।उसके प्रतिरोध की प्र क्रया

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

परिवर्तन के प्रमुख कारणों में पुरुषों की आकांक्षा को मारना है जो सदैव अपनी औरत से कम देखते हैं। परिवार में स्त्री पुरुष की सहभा गता प्रबंध देते हैं आज की स्त्री के टकराव के अर्थ को उसके कारणों को भी रेखां कत करते हैं। इस संबंध में रंजन मश्र लखते हैं" कआधुनिकता की दौड़ में सम्मि लत होते हुए भी परंपराओं से मुक्त ना हो पाना भारतीय नारी की ऐसी मजबूरी है जो उसकी व्यक्तित्व को निरंतर वभाजित करती रहती है और वह अपने ढंग से अपनी शर्तों पर जीने की लालसा रखते हुए संकल्प करते हुए भी अपनी सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों की अनिवार्य परिणीति को स्वीकार कर लेती हैं"।१०" धीरे समीरे" में सफल दांपत्य जीवन की कथाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।हिंदी उपन्यास में सुनंदा और नंदन का सफल दांपत्य जीवन दिखाया गया है।पति के रूप में नंद गैर जिम्मेदार है, निकम्मा है फर भी वह पत्नी पर अ धकार चाहता है।नंदन लेखक होने के सपने देखता है।अपने घर परिवार के लए कुछ नहीं करता है।सुनंदा को बार बार कहने पर आ खर घर छोड़ देता है।नंदन के चरित्र के बारे में मश्र जी ने लखा है" क ववाह के बाद उसने अपने मूल स्वभाव को पुरुष के अ धकार का रंग देना शुरू कर दिया क पति की है सयत बनाने के लए पुरुष का अ धकार जताना बहुत जरूरी था।११नंदन और पत्नी सुनंदा के आपसी संघर्ष चलता है।दोनों के कारण परिवार टूटने की स्थिति में रहता है।

"सुनंदा नंदन को ठोकर मारते कहती है तुम क्या मेरी देखभाल करोगे --------जो अपनी देखभाल नहीं कर सकता।--------पति नाम के छाते की मुझे जरूरत नहीं अब -------हटो-------।"१२सुनंदा स्वा भमानी है वह अ धकारों के प्रति सचेत है। वह समझती है क उसे जरूरत नहीं है। मैं खुद अपना अच्छा बुरा सोच सकती है। परिवार का ध्यान रखने का दायित्व समझती है। इस तरह पति का छोड़ना भाटी परिवार मश्र के अ धकार और मान सम्मान को स्था पत करता है" ध्रुवस्वा मनी" नाटक की चर्चा करते अ धकारों के प्रति सचेत कया था इस संबंध में लखते हैं क प्रारं भक जीवन का प्रभाव क्या है प्रसाद की ध्रुवस्वा मनी में सुनंदा और नंद प्रणोदक एम आंसर चत्रण को देखा जा सकता है सुनंदा के द्वारा नंदन को ठुकराना हिंदी उपन्यास में पत्नी की तरफ से क्रांति का बिगुल है।इसी को आधार बनाया है। रामप्रसाद और उसकी पत्नी के संबंधों को देख सकते हैं इस प्रकार पति पत्नी मलकर रामप्रसाद अपने ही घर में बाहर निकाल देती है। उसे हुए बेटे को भी अलग कर देती है। रामप्रसाद पत्नी का अपने प्रेमी के साथ संबंध भारतीय परिवार का काला पक्ष है। वह ब्राह्मणी का अपने पति के प्रति प्रेम का उज्जवल पक्ष है। दीदी के लौट जाने को लेकर दूर-दूर तक कोई शकायत नहीं ना कोई कड़वाहट प्रेम ही प्रेम। ऐसी क्षमता और मधुरता चेहरे पर।"११ राजन और छोटे बेटे उसकी पत्नी के साथ एडजस्टमेंट करने के लए कहता है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

तो छोटू कह देता है वह आप की पीढी थी जब जमाने घुट घुट कर काटो ता क बुढ़ापे में एक दूसरे का सहारा बन सके हमें शुरुआत वहां चाहिए आप लोग एंड करते थे क्या फायदा अगर जिंदगी के अच्छे दिन एडजस्टमेंट करते-करते ही निकाल दिऐ है।१२

कथाकार ने माना है वर्तमान संदर्भ में शहरीकरण व भूमंडलीकरण के दौर औद्योगीकरणआदि के प्रभाव से भारतीय युवा पीढ़ी में जो परिवर्तन आया है वह दाम्पत्य सुखों में कष्ट खारक सद्ध हुआ है।भारतीय परिवार में पाश्चात व्यक्ति की तरह अकेला चलने की एक धारणा हो गई है भारत में आत्महत्या और अपराधों का दल भी इसी कारण से बढ़ता जा रहा है रंजन और रमुआ स्थिति को अकेला होना आज के एकल परिवार की वडंबना दर्शाता है जो दांपत्य जीवन मूल्यों का ह्रास है। कोहरे में कैद रंग उपन्यास के माध्यम से मश्र जी ने कस्बाई और महानगरीय दांपत्य जीवन में संबंधों की हकीकत को प्रस्तुत कया है जो अर वंदऔर उसके परिवार में महानगरीय परिवेशी तथा भूमंडलीकरण से प्रेरित वचारधाराएं हैं जिनमें रेवा और ट ू मौसी जैसी आधुनिक नारियां हैं। उनके वचार बड़ी कठिनाई से सहन कर पाने की स्थिति में है। रेवा सरस्वती का वस्तार और स वता का नया रूप देखने को मलता है। नानी का चरित्र आत्म निर्भर है।भारतीय परिवार में दांपत्य जीवन को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

देखें तो पति-पत्नी अर वंद और एक दूसरे के संबंधों में नीचा दिखाने वाली स्त्रियों की दशा बिगड़ती हुई दिखाई गई है। बात करें तो राजा की बेटी भौजी का मात्र तेरह साल की उम्र में ववाह कर दिया जाता है। शरकत करने के लए मलती है और पीछे नहीं है परिवार में सास बहू के संबंधों में भी ध्यान रखा जाए और उसके साथ का संबंध भी कुछ ऐसा ही है। कोहरे में कैद रंग की "रेवा"का ववाह ऐसे शख्स हो जाता है जो जानवरों जैसा व्यवहार करता है ऐसा काम कुंठा से ग्र सत होने के कारण उसके शरीर के साथ क्रूरता से पेश आता है रेवा अपने पति के बारे में अर वंद को बताती है"वह आदमी था जो एकदम सामान्य रहता था पर मुझे अकेले देखते ही हिंसक पशु में बदल जाता जैसे उसकी पत्नी नहीं पूर्व जन्म की कोई दुश्मन थी मुस्ताक जमीन जो दिखा उस पर पटक देता है ऐसे सवार हो जाते हैं इतना जोर से जहां कहीं भी चला जाता इधर उधर कहीं भी नाखून दासपा के था मुझे चता चता चला जाता है वह श्याम शक्तिशाली दिखाने की फराक में होता और मेरा ध्यान अपने बचाव पर अब क्या करने वाला है ?और मुझे कैसे? उससे बचना है मैं रोती तो वह मुझे मारने लगता शरीर के लए उसकी भूंक असीम थी एक देती की तरह कभी भी कहीं भी आ जाता मुझे कमरे में ले जाकर भीतर से बंद कर लेता और शुरू।"१३ भारतीय समाज में मध्यमवर्गीय स्त्रियों की जो स्थिति है वह बड़ी सोचनीय होती जा रही

है। वशेष रूप से महानगरीय परिवेश का प्रभाव रेवा के चरित्र में मुख्य रूप से स्पष्ट झलकता है"तो कम से कम अपने जीवन का ध्यान रखते हुए फैसला लेती है।सरस्वती सा वत्री और रात को वह कार्य नहीं कर पाते हैं ले कन यह स्पष्ट है क परसों में एकमात्र है शादी में औपचारिकता पूर्ण हो चुके अर वंद की तरफ आक र्षत होती है और करती है नहीं मलता है।

देवधर उनकी तरफ आकर्षण ववाहेत्तर संबंध की तरफ इशारा करता है जो भारतीय परिवार में ववाह नामक संस्था की ही देन माना जाए तो ट ू का चत्र की भारतीय नारी की वस्तु स्थिति को प्रकट करता है। मश्र जी ने संबंध में ट ू मौसी के माध्यम से नारी वेदना को प्रस्तुत कया है। मुल्लू मामा और उनकी पत्नी के संबंध भी अजीब हैं अजब ने अपने पति को उसी स्थिति में देखा जिसमें सा वत्री जैसी स्त्रियों को उनके पति रखते हैं।अपने पति का हर तरह से शोषण करती है।"मुल्लू मामा के पुश्तैनी घर में अजब और उनका मामा पति-पत्नी की तरह रहते और मुल्लू मामा उनके नौकर की तरह जैसी तनख्वाह मली अजब झपट ली थी और फर उसे चलता उसका और मामा का महीने भर का मुल्लू मामा को अपनी बीड़ी के बंडल के लए भी पैसे क्रकेट आकर मांगना पड़ता है।१४ ऐसे संबंध परिवार में जनप्रवास ना में स्वार्थ स द्ध के लए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

सारी सीमाओं को पार करती है तंत्र के साथ-साथ उसकी वद्रूपता को भी रेखां कत कया गया पुरुष ही नहीं स्त्री दांपत्य जीवन को खराब करने में शोषण करने के लए पुरुष को मूर्ख बनाती है जो एक शब्द में बाधक माना गया है। यह परिस्थितियों के कारण भी होती देखी गई है दांपत्य जीवन में पहुंच जाता है।"उन पौधों पर "उपन्यास में युवा गुरु और उनका दांपत्य जीवन है वह है पति पत्नी संबंध ऐसा कुछ भी नहीं है। जबरदस्ती की शादी हुई है।मैं नहीं चाहता क उस से प्रेम करें और पत्नी का लगाव सर्फ उसके शरीर से लेकर करता है। केवल आदमी है पाखंडी है और महिलाओं का शोषण करता है अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर पाता। क्षमा गोस्वामी भारतीय परिवार के संबंधों में लखती है " क पति-पत्नी के मध्य वास्त वक रूप से प्रेम का वकास में परस्पर दायित्व देखभाल ज्ञान आदर सम्मान से संबं धत वभागों में ही वकास पा सकेगा।१५

वह और युवा गुरू के दाम्पत्य संबंध पूरी तरह से औपचारिक हैं जिससे पूरा परिवार प्रभा वत होता है।उसमें परिवार की इच्छा है दीक्षा का कोई ध्यान रखा जाता है परिवार और घर की कल्पना केवल पति-पत्नी के संबंधों से ही होती है।आज शरीर के लए शारीरिक संबंध कीअ धक आवश्यकता है। आज के समय में रिलेशन शप बनाकर के बिना ववाह

के रहना पुरुष की आं शक सोच का प्रतीक है। केवल वह शारीरिक क संबंध बनाकर ही खुश रहना चाहता है। वह अपने कर्तव्य से भागता है जब क उसकी पत्नी श क्षत होना चाहती है। पढ़ना चाहतीहै तो उन्हें पढ़ाता।पति-पत्नी दोनों के अलग हैं युवा और यौन संबंधों को प्रमुखता है तो वहीं दूसरी तरफ वह प्रेम कथा भावना आदर को प्रमुख मानती है। मैं के सामने प्रतिकूल परिस्थितियां होने पर भी संबंधों को अनुकूल नहीं बना पा रही है दांपत्य संबंध को सुखी बनाने के लए पति पत्नी दोनों पारस्परिक सहयोग आवश्यक होता है। कसी एक के उसको लक्षण से संबंध टूटने लगते हैं भारत के समाज में प्रबंधन के बावजूद स्त्रियां कतने श क्षत हैं यह वषय बढ़ा चंता करने वाला है। ववाह के उपरांत माता पता को छोड़कर आती है उसके सानिध्य में रहते हैं टूट जाती है प्रेम प्रकाश के मध्य दूसरी तरफ युवा गुरु और निशा के मध्य प्रेम प्रकाश से प्रेम करती हैं जब प्रेम प्रकाश उसे खुद के बारे में और उसके भ वष्य के बारे में स्वयं निर्णय लेने के लए कहता है तब वह कहती है"मैं दोनों को ही नहीं समझती------- सोचने का अभ्यास ही नहीं हुआ क्यों क शुरू से ही सोचने के लए हतोत्साहित कया गया,अब तक।आप पहले आदमी है जिसने कहा क सोचो। मैं फलहाल पीएचडी करना चाहती हूं"।१६कथाकार वह के माध्यम से वर्तमान जीवन संदर्भ में जूती ही नारी की वषमता को प्रस्तुत करना चाहता है ले कन वह खुद के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

प्रति आकर्षण में बन जाते हैं संस्कृत में प्रेम प्रकाश से हर प्रकार के सुख दुख का साथी बन जाता है और एक दूसरे का सहयोग करते हैं।युवा गुरु के तर्क भारतीय समाज के संदर्भ में स्त्री के कसी प्रेम संबंध को लेकर के और वह पाखंड करता है।वह भोग वलास में लप्त रहता है। निशा और युवा गुरु पत्नी को छोड़कर चले जाने से लोगों ने उसकी प्रतिष्ठा पर सवाल उठाए वह को वापस घर लाने के लए बेटे सद्धार्थ का सहारा लेते हैं। उसे मां से फोन पर बात करने से पहले सखाता है। मां से बोल तेरी बहुत याद आती है मां तू जल्दी आ! जा !इस प्रकार संतान के माध्यम से युवा गुरु को वापस बुला लेता है वह देखती है इतने दिन तक मैं बाहर ही रही सद्धार्थ की जिंदगी बिगड़ चुकी थी मां बाप के अभाव में हिंदी छोड़कर मेरे पास नहीं था क्यों ग्रुप अपनी संतान से कोई लेना-देना नहीं उसकी मां कहती है पढ़ लखकर जैसे बड़ा लाड साहब बन जाएगा।इस प्रकार छोटे से बच्चों को संस्कार देने की अपेक्षा उसको करा दिए गए हैं जो संस्कार हैं। वह बच्चों को मार्गदर्शन करने की अपेक्षा उनको हातात करते हैं उनको हॉस्टल में दा खला दिया जाता है यह संस्कार हैं।दांपत्य जीवन की लड़ाई के बीच में सद्धार्थ जैसे बच्चों की स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। दे खए बेचारा मां-बाप के दो पाटों में फंसाया कौन पूछता होगा क उसे बेटा तुझे क्या खाना है? तारिक संबंधों की परवाह कए बिना गुरु और वह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

इन दोनों के बीच आपसी तर्क कुतर्क होते हैं सब योग व अपने मां बाप के सामने कह देता है"आज साल होने को आ गया इस लए अपना शरीर मुझे नहीं दिया हमारे शारीरिक संबंध नहीं है हम कहां की पति पत्नी हैं। १७ छा गई है परते जमा हो जाए फल्म प्रेम प्रकाश के आगमन ने उस भूल को हटाया है प्रतिदिन संगत के लए प्रेरणा तलसानिया साथ ही जीवन का हिस्सा बन गया उसके घर को बताकर उसके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है उसे नौकरी भी लगाता है।

"शाम झल मल की"में आधुनिक भारतीय परिवार में कथा नायक मै के माध्यम से दांपत्य जीवन में वृद्धावस्था तथा कसी का मेहमान की तरह रहना समस्याएं पारिवारिक जीवन में जहर घोल देती हैं।आज की पीढ़ी की संवेदना और नैतिकता मानव वश्रंख लत होने लगी है।पश्चात संस्कृति ने शून्य कर दिया और व्यक्तिगत केंद्रित हो गया है। पांडे जी का जो बड़ा बेटा है पत्नी के कारण अलग रहता है।पत्नी को चाहिए सास-ससुर से वह भी (मां-बाप से) दबकर नहीं रहना चाहती है क्यों क अपने जीवन को अपना चाहती है। हालां क बाद में दोनों एक साथ मल जाते हैं कंतु दांपत्य जीवन में आने वाले दिखावे को स्वीकृति प्रदान की है। शाम की झल मल उपन्यास के माध्यम से परिवार में दांपत्य संबंधों के निरंतर बदलती प्र क्रया को दर्शाया गया है। नौकरी और उसके पति

के संबंध के संदर्भ में परिवार के पुराने स्वरूप को दर्शाया है। नई संभावनाओं की तलाश की गई है।पति निकम्मा था नसे और नशे का सेवन करने वाला है। वह सही गलत का ववेक से निर्णय लेती है। ले कन परिवार को बचाए रखने के लए को शशों के बाद फर भी मैं झेल रही थी पूरी जिंदगी उसके साथ बिताने को तैयार थी। एक ऐसी सु वधा के लए क्यों क सारा खर्च उठाऊंगी मैं काम करूंगी। करूंगी इतने दिनों चला भी अब उसने भी जहां कहीं उल्टी कर देना दर्द से भरा हुआ साफ करें तो घर के बाहर नौटंकी करता आस पड़ोस में उल्टी सीधी बातें करते निकाल कर बाहर घूमता सारी दुनिया को पता था। देखो मैं पत्नी से सर फरा हो गया।सब मुझे जलाने के लए करता था।१८

दांपत्य जीवन में पत्नी को अ धकांशत उत्पीड़न का शकार होना पड़ता है। उसके मुख्य आ र्थक और मान सक क्षमता के रास्ते से ही संभव हो पाती है संबं धत होने का प्रमुख कारण है आज पुरुष स्त्रियों में अपना अ धकार मांगते हैं। अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हैं तनाव की स्थिति पैदा हो जाती हैं। दाम्पत्य संबंधों को लेकर करने का एक कारण अनु वभागीय धर्म आ र्थक दृष्टिकोण की पहचान कर वभाग कया जाता है।"शाम की झल मल"बंदूक लेकर वभाग के माध्यम से अगले वभाग को दर्शाया है मेरा ववाह तो तुमसे भी खराब हुआ था देसी गाय को बेल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

गाड़ी के पीछे बांध का दूसरे गांव ले जाया जाता है तीन साल की उम्र में अंतिम चरण में ढोल पीटा जाता था।१९ खुशी भारतीय परिवार में स्त्री की स्थिति को देखते रहता है। अं कत कहती है क और चाहे जितनी पढ़ी लखी हो चाहे जितने बड़े पद पर हो अगर ववाहित है तो ववाहित ही रहेगी मुख्य काम पति का मन लगाना पहले भी मैं क्या थी? पुरुषों के मन महिलाओं के लए खलौना।२०इस प्रकार गो वंद मश्र जी के उपन्यासों में दांपत्य जीवन को लेकर वरोधी वचार व्यक्त

द्वारा उन्होंने समकालीन परिवेश के टूटते रिश्तों अध्ययन करते हुए स्त्री पुरुषों की मनोदशा, पारिवारिक वघटन संत्रास् से दु खत पति-पत्नी के संबंधों की बात को आमजन तक पहुंचाने का प्रयास कया है। संसार के अनुसार का जानते हुए भी जीने के लए आए हैं यह जीने का नशा पैदा करते हैं इस लए बनाए जाते हैं बनाए जाते रहेंगे वरना जीना भी दूर हो जाएगा साधन के लए वही रास्ता है आप पताजी को पसंद नहीं करती थी पसंद घृणा करती थी मैंने तुम लोगों से कभी छुपाया भी नहीं क जीवन अवसान बेला में जब मैं अलग रहने को गई तुमने यही कहा था याद है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

२ पता पुत्र का संबंध:------

परिवार का मु खया पता होता है तथा पुत्र उसकी संतान पता-पुत्र के संबंधों में मधुरता है तो परिवार का संयोजन भली-भांति चल जाता है।यदि पता और पुत्र के संबंधों में मधुरता नहीं है तो उनका जीवन नारकीय हो जाता है क्यों क हमारी सांस्कृतिक सामाजिक एवं वैधानिक परंपराओं के अनुसार पुत्र के बिना पता की मुक्ति नहीं होती है। ऐसी परंपराएं रूढ़ियां हैं कंतु वर्तमान समय में दोनों की वचारधारा एवं उनके कर्तव्यों का निर्वाह नहीं कर पाते तो परिवार नरक हो जाता है। मश्र के कथा साहित्य का वश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर पता और पुत्र के संबंधों की जो स्थिति है उसका वस्तृत ववरण निम्नानुसार प्रस्तुत है। पता पुत्र संबंधों की बात की जाए तो शाम की झल मल में लेखक ने अपने वचार व्यक्त कए हैं क "मैं उस आदमी की गा ड़यां लात घुसा खाकर थक गई हूं जो वह जी वत था तब जैसे तैसे उसका साथ दिया क्यों क मैं उसका बोझ तुम पर या कसी पर नहीं डालना चाहती थी। अब मेरी सहन शक्ति ने जवाब दे दिया है। कैसे आते कठोर सब तुम्हारी पत्नी से तुम से या तुम्हारे बच्चे से वह मुझे लेने जाते इस लए मैं अकेले रहना चाहती हूं।तब तुम्हारा घर छोड़ते वक्त अगर शारीरिक रूप से तुम्हारे जैसे ठीक-ठाक होती तो क्या मैं पता कोई नया घर बनाने

के लए तुम निकल जाते हैं। तुम हो, उसका रंग,केदारी,बेवजह,करीमगंज का कलेक्टर आदि कहानियों के माध्यम से सुखदेव संह की गारंटी लॉकअप के रूम में उसकी वभाग के गेस्ट हाउस में ले जाने दिया गया सुखदेव संह की जिम्मेवारी दूसरे दिन कोर्ट में लाया जाए इस बीच कहीं बाहर नहीं जाने देना। सपने व चंगारी क शश कहानी के माध्यम से सामाजिक समस्याओं एवं स्त्री पुरुष संबंध व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा वर्तमान संदर्भों को छूने वाली घटनाएं मश्र जी ने मौजूदा स्थितियों पर बंदिश ववाह गृहस्थ जीवन एवं दांपत्य जीवन में हो रही टकराहट को बड़े ही सहज रूप में अ भव्यक्त कया है। यत्र धर्म:ओर नये सरे से कहानी में सामाजिक संवेदना पारिवारिक वसंगतियां मध्यमवर्गीय पारिवारिक घुटन दांपत्य जीवन एवं वृद्धावस्था के समय संतान से मलने वाली अपेक्षाओं की जगह उनको ताने मलना जीवन यापन करने का संघर्ष आदि प्रस्तुत की गई।"जानता था क राकेश अपने बच्चों को बहुत चाहता था बच्ची बड़ी तो उसकी लाडली थी कंधे पर उठाए उठाए घूमता रहता अब तेरह चौदह की हो गई है।लड़का उससे दो साल छोटा है। मैं रोहित के सामने ही पैदा हुआ था। उसकी परवरिश जरूर उससे नहीं देखी थी। वह अपने बच्चों से बहुत अटैच था। रोहित के मुंह से निकल गया था पर वैसा नहीं रहा था। इधर तो सालों के बच्चों में दूरियां हो गई थी। बहुत पीने लगा था कभी-कभी दिन में दफ्तर में ही ऐसे साथ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

गए थे घर आता तो कए हुए छत्रछाया सी रहती है"२१ पारो और देवदास जो क "सतह का झाग" कहानी में वर्तमान प्रशासन व्यवस्था एवं दांपत्य जीवन में उत्पन्न वकृतियों को दर्शाता है। और ख्वाब देखता मुन्ना कुर्ते पेज भक्ति बातें इनमें मानव जीवन से जुड़ी संवेदना ओं को यथार्थ अनुमति प्रदान की है जो क वर्तमान परिदृश्य में साकार होती दिखाई देती है। जाति पाती धर्म संप्रदाय आदि से ऊपर उठकर आज की पीढ़ी में रत्ना के माध्यम से रूपा गुजरती हुई जिंदगी दब्बू स्वभाव तथा संतान के प्रति होने वाले व्यवहार आदि को यथार्थ गति प्रदान कया। शादी एक जिम्मेदारी है पूजा फल्म दुस्तान में तो शादी आपकी निजी इच्छा हो को एक साथ में रखकर की जाती है उसमें क्या मजा।२२ कहानी समग्र भाग **1** गो वंद मश्र ट्रस्ट **104** च र्चत कहानियों में रगड़ खाती आत्महत्या चलम मन और दुआ बर्फीले पहाड़ों पर एक सड़क **2** तस्वीरें मजबूरियों के भूत आदि कहानियों में वर्तमान जीवन संदर्भों को का र्मकों के माध्यम से अपने कर्तव्य के प्रति सच्चा और ईमानदारी से कार्य करने की अपेक्षा अ धकारों के अ धकारियों की चरौरी करती हुई प्रतीत होती है। सर जी की वह दरियाई शहर कहानी खंडहर की प्यास नए पुराने मां-बाप उपे क्षत पीढ़ी दर पीढ़ी में जलने वाले संस्कृति एवं संस्कारों की वकृति पास्ता श्रद्धा का अंधानुकरण इन सब को मनो वेब से प्रस्तुत करने का प्रयत्न कया है।

झूला" कहानी में पति को बकाए देहात ना पड़ता था मैं अगर नौकर को एक खींची हुई सुनता है मैं बुलाते थे तो उन्हें सुनती ही हो कहकर जोर से घंटी बजाते थे एक तरह से उन्हें जबरदस्ती घूमने को ले जाते पीछे-पीछे अपने हलके शरीर को भी करोड़ ते हुए चलती रहती पति बैठकर सुस्ताने को कहते तो बैठ जाती तब तक बैठी रहती जब तक वह पति आवाज नहीं दे देते पति के कहने पर फर चल पड़ती उस तरह उन्हें चलते हुए देखकर अक्सर ऐसा लगता था जैसे लेडी मैकबेथ बगैर मोमबत्ती के नींद में चलती जा रही हो ऐसा लगता था जैसे उन्होंने हर क्षण सर्फ एक ही तलाश थी नींद की जैसे उन्हें सालों से सोने को नहीं मला।"गो वंद मश्र कहानी समग्र भाग **2** झूला कहानी पृष्ठ **42** खुद के खलाफ शीर्षक कहानी के माध्यम से दांपत्य जीवन में होने वाली आहट छोटे से घर में वमला के माध्यम से एक दूसरे को परिवार में मन से कलु षत वचारों का आपस में घरेलू तनाव का कारण बन्ना देखा गया है पति-पत्नी फरीदाबाद में जमीन ले लेते हैं जब घर में बैठे होते तो उनके संवाद कस प्रकार के हैं एक का एक ही पतिदेव चीज को आए और खुद को बड़े ए की मात्रा तरह की खुशी पर सीधा करते भोले अच्छा जी आप तो छोटे हैं कहां बाहर खाएंगे नहीं खाएंगे कुछ मीट सीख ले आता हूं

तब तक आप लोग कुछ प्यार वार करिए दस रूपए खाने के सामान के लए और बीस से ही दे दीजिएगा ड्रामे के बाद।

इस प्रकार गो वंद मश्र जी ने अपनी कहानियों में छोटी-छोटी समस्याओं सामाजिक पारिवारिक संघर्ष पति पत्नी संबंधों में एक दूसरे के प्रति मौका समाप्त होना प्रीति मोह माइकल लोबो सुनंदो की खोली सर्फ इतनी रोशनी अर्थ ओझल आसमान कतना नीला निष्काम में धुंधडका यूं ही खत्म अवरुद्ध आदि कहानियों के माध्यम से दांपत्य जीवन में आने वाली व वध समस्याओं को तथा तिवारी संवेदना माता पता के प्रति समर्पण बहन भाई के रिश्ते एवं संतान के प्रति होने वाले वचारों को यथार्थ स्वीकृति प्रदान की है।"धुंधला पीला"कहानी है जिसमें आ र्थक समस्याएं सामाजिक एवं पारिवारिक संवेदना स्पष्ट परिल क्षत है।भारतीय परिवारों में बदलते मूल्य और संस्कृति के परिदृश्य को भी वैसी जी परिस्थितियों को उद्घाटित करना मश्र जी का ध्येय है। आज की युवा पीढ़ी भारतीय मी डया टीवी इंटरनेट आदि मोबाइल के माध्यम से समाज की संस्कृतियों से परि चत होती जा रही है।इनके संबंध भारतीय समाज और संस्कृति से दूर दूर तक नहीं था इसी कारण आज भी भारतीय मी डया एक ऐसी म श्रत संस्कृति को अपना रही है जिसके कारण आज भारतीय परिवार का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।आज बड़ों के प्रति

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

सम्मान नहीं है छोटा के प्रति प्रेम नहीं है।इसका कारण रहा दूरदर्शन पर प्रसारित अश्लील वी डयो व दृश्यों वज्ञापन बढ़ते हुए हिंसात्मक दृश्य और मोबाइल का कारण प्रमुख।भारतीय परिवार में वृद्धों का महत्वपूर्ण और सम्मानित स्थान है। कन्तु अ धकांश समय परिवारों के साथ बिताता है परिवार में उत्सव महोत्सव तीज त्यौहार आदि के नेतृत्व में संपन्न होते हैं। जैसे संयुक्त परिवार एकल परिवार में आया है वैसे ही परिवार में वृद्धों की स्थिति सोचनीय होती चली जा रही है। वृद्धों का जीवन मानो ऐसे लगता है जैसे हा शए पर खड़ा कर दिया हो। क्षमा गोस्वामी लखती है की "वर्तमान समय में व्यक्तिगत अवसरवादी ता व्यवसायिक था और गतिशीलता ने भी परिवार के वृद्ध जीवन को कम क्षति नहीं पहुंचाई है।"२२ रुद्रप्रताप के दो परिवारों की अप्रत्यक्ष टकराहट व परिवार की जटिलता को दिखाया गया है। अरे इसका परिवार और उसके दो पया राजपूत दरबार को जोड़ें रखी है एक तरह से गुलाम नहीं है उनके मन में राज दरबार के भक्ति इस तरह रो कसकी है वह तक प्रतिरोध नहीं कर पाते हैं मां साहिबा का हरीश के पता का कहना है।इसे राजमहल के लए रहने दो। फकर ना करो, यह सुर क्षत रहेगा।इस पर राजकुमार की छांया पड़ चुकी है। यह बाहर कहीं नहीं पनप सकेगा।ईश्वर के वधान का संकेत समझो महंत जी यहीं पल ने दो हमारे लड़के लड़ कयां ------क्या सभी मसूरी भेजे जाते हैं ? फर से कोई जंट् साहब

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

बनना है क्या! बड़ा होगा तो तुम्हारी गद्दी ही तो लेगा तब तक नहीं रानी भी आ जाएगी।२३ उनका कहना है क परिवार के दबाव के कारण धूर्तता को दर्शाता है। आम भारतीय परिवार की मान सक गुलामी का पता चलता है।आ र्थक गुलामी के प्रति हरिश के पता से बोलते हैं क कस तरह बर्बाद कर रहे हैं।अप ने हमारी बहिन की जिंदगी बर्बाद की हैअब उस मासूम लड़के को भी होम करने पर तुले हुए हो।"२४ के माध्यम से परिवार को एकजुट रखना कठिन ही नहीं असंभव है। यहां धन्ना लाल के द्वारा धन की लालसा तथा दहेज की कानपुर से परिवार को दिखाया अपने बेटे लंदन बंदा से इस लए दूर रखता है क्यों क उन्हें शादी में दहेज नहीं और मैं अपने बेटे की दूरी से के शादी करना चाहते हैं। एक पता की अपने पुत्र वधू के प्रति घृ णत सोच स्पष्ट परिल क्षत होती है। ता क भैया जात से कोई सा न ले सके नंदन के लेखक बनने की धुन में ही पता के धन की लालसा के वजह से लंदन और सुनंदा का परिवार करता है वापस पता के पास आने के बाद धन धन से मलने जाना चाहता था। सुंदर में मश्रा जी ने बताया है क सुनंदा बहू के रूप में केवल इस लए माने नहीं थी क लड़के ने चुपचाप ववाह कर लया बहुत ही नहीं लाई ववाह हो गया क्यों क सुनंदा और उसकी मां गरीब है।इस लए जमनालाल की संपत्ति के लालची हो गए।२५ धीर समीरे प्रश्न संख्या 201 धन के साथ दहेज जैसी कुप्रथा को भी लेखक

ने दर्शाया है अता पारिवारिक वसंगतियां पैदा करने में कभी-कभी माता और पता का भी रोल होता है इसे यह भी प्रतीत होता है पता है सुनंदा जैसी लड़ कयों को संघर्ष करना उनके जीवन का भी बन जाता है अपना चाहते हैं अपनी बहू को बेच रहे थे कहां ले जाएंगे इतना पैसा ऊपर कोई बैंक नहीं है।२६ वही **203**

उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने कुछ ऐसे माता- पता हैं जिनकी प्रकृति है उसके बारे में उन्होंने बताया है की निर्मला बहन अपने घर का बटवारा नहीं कया तो उनके दोनों बेटे मानते हैं क मां की ममता नहीं है मां बेटे के संबं धत से परिवार में आदर्श माना जाता है इस धरातल पर गर गए हैं नैतिक मूल्य की पराकाष्ठा भर चुकी है कुछ को जरूरत से ज्यादा अपने बच्चों को देते हैं और इसी कारण बच्चे बैठने लगते हैं और फर बाद में जरूर आना हो तो माता- पता और बच्चों में तनाव और भैंस भी होती है इस प्रकार का धन का अ धकार दिखाना है भारतीयता का प्रभाव है। स्टार की कलु षत मान सकता के कारण पारिवारिक जीवन में कंटक पैदा हो जाता है या वक्रम हो जाता है जिसके कारण की पारिवारिक वद्रोह बढ़ जाता है और धनुष यथार्थ बोध की रोशनी में दिखाते हैं जिसके कारण परिवार आत्मीय संबंधों के स्थान पर स्वार्थ का संबंध बन कर रह जाता है। पारिवारिक दृष्टि के कारण

महिला की स्थिति दयनीय हो जाती है सतना बहन रथयात्रा होकर आती है छोटा सीटों से पकड़ता है मंजुलाबेन अमीर घराने की औरत है परंतु पति हमेशा वदेश घूमते रहते हैं और घर के लड़के बहू भी उसे छुटकारा पाना चाहते हैं उजाला बहन की समस्या पदों के प्रकार की व्यथा है जो जीवन के अंत में आते-आते महसूस करते हैं। पांच आंगन वाला घर है जिसमें तीसरी पीढ़ी है और टूटने के कगार पर है कालखंड की तीसरी पीढ़ी में संक लत होने का एक बड़ा कारण प्रशासन सभ्यता का बढ़ता हुआ प्रभाव है उस के माध्यम से हैं। साजन के माध्यम से परिवार के प्रथम को बहुत ही बारीकी से चत्रित कया है परिवार के कारण तेजी से बदल जाता है। एकल परिवार के अंतर को स्पष्ट कया है। उपन्यास में राजन की व्यवस्था आज भारतीय परिवार के अ धकांश मां-बाप की व्यवस्था है। परंपरागत जीवन मूल्यों का दो दर्जन के माध्यम से अ धकार भारतीय परिवारों के दर्द को साक्षात्कार कराता है। परिवार में जब पीढ़ी दर पीढ़ी मलेगा परिवर्तन होते हैं तो संबंधों में भी तेजी से परिवर्तन होता है पहली पीढ़ी में राधेलाल दस ग्राम के लए घर छोड़कर जाते हैं दो साल बाद अपनी पत्नी से मलते हैं तो उन्हें भला-बुरा कहने के बजाय उनके पैर छूती और कहती है आपका यज्ञ यज्ञ आपसे अलग कहां रहूंगा शांति देवी इस बात का बुरा नहीं मानती है और अपने उनके चाचा को घर में रखने से मना कर देती है और ओमी छोटी सी बात पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

ना एक दूसरे के प्रति रखना है। रमई बार कहती है भाई साहब गन कर ले ले बार-बार सुनाने की जरूरत नहीं है।२७ "धूल पौधों पर" में सद्धार्थ चाहता है क उसके मां-बाप एक साथ रहे अपनी मां से कहता है तुम टीचर हो यहां भी तो हो सकती हो कतने सारे स्कूल हैं यहां मेरे साथ रहो नेमा तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लगता।"२८ यहां बच्चा छोटा होते भी माता- पता से अ धक समझदार प्रतीत होता है। वहअ र्पता को दोषी नहीं मानता बल्कि मां को दोषी मानता है क्यों क उसका ममता के प्रति ज्यादा सम र्पत है।मां में निष्ठा करता है भावना एवं ममता के माध्यम से वह दोनों को मलाना चाहता है।"शाम की झल मल" में कथा नायक में गायब हो जाता है घरवालों की परेशानी महसूस नहीं होती वह जानता है अग्नि के गायब हो जाने के कारण नहीं बल्कि उससे उत्पन्न होने वाली परेशानी को लेकर परेशान थे कथा नायक के स्वर में अपने बेटे से कहता है "उस पर कसकी नजर है यह तो नहीं पता है पर उसकी नजर जरूर उस पर है यह जाहिर हो गया।"२९ शाम की झल मल पृ २९ कुत्ते फर्क दिलचस्पी बजरंग शुरुआत दोस्त जिहाद ढलान पर व्यवस्थित बांध दौड़ एवं झप । आदि प्रतीकात्मक कहानियों के माध्यम से वर्तमान समाज में दू षत शक्षा प्रणाली संस्कार एवं दांपत्य जीवन में आ रही कठिनाइयों का मूल हेतु व्यक्ति की पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण एवं संस्कार हीनता मूल्य हीनता प्रमुख कारण माना है। भार्गव परिवार

के माध्यम से वृद्धों की दशा का वर्णन बताते हैं कह रहा है क जो माता- पता अपना सर्वस्व देकर अपने बेटे बहू के लए घर लेते हैं उसी में कस प्रकार को मेहमान

सन्दर्भ ग्रन्थ

१गो वंद मश्र:कहानी समग्र भाग १पृष्ठ ८९-९०

२गो वंद मश्र:उतरती हुई धूप पृ ३७

३गो वन्द मश्र:उतरती धूप पृ ९१

४संपादक चंद्रकांत वामदेव टेक मश्र सरन के आयाम पृष्ठ ९८

५ गो वंद मश्र लाल पीली जमीन:चुनी हुई रचनाएं भाग१पृष्ठ ३०७

६ संपादक रामजी तिवारी:आकलन गो वंद मश्र पृष्ठ ८०

७ गो वंद मश्र:तुम्हारी रोशनी में पृष्ठ ५१

८चंद्रकांत वांदिद्डेकर:गो वंद मश्र का ओपन्या सक संसार पृ५४

९संपादक चंद्रकांत वांदिदडेकर:गो वंद मश्र सृजन के आयाम पृ१७०

४गो वंद मश्र के उपन्यास और भारतीय परिवार अमृत कुमार पृ ५२

७"चंद्रकांत वांदिद्डेकर गो वंद मश्र का ओपन्या सक संसार पृ५४

८संपादक चंद्रकांत वांदिददेकर गो वंद मश्र सृजन के आयाम पृ१७०

९ गो वंद मश्र धीर समीर

१०गो वंद मश्र धीर समीरे पृ

११ गो वंद मश्र धीर समीरे पृष्ठ १७८

१२ गो वंद मश्र पांचआंगन वाला घर पृ१९७

१३ गो वंद मश्र कोहरे में कैद रंग १४५

१४ गो वंद मश्र कोहरे में कैद के रंग ११४

१५ क्षमा गोस्वामी परिवार में सौहार्द पृ ३०

१६गो वन्द मश्र धूल पौधों पर पृ४३

१७गो वन्द मश्र धूल पौधों पर पृ१०३

१८ गो वंद मश्र शाम की झल मल पृष्ठ ५८

१९गो वन्दन्शाम की झल मल पृष्ठ २४

२०गो वन्द मश्र शाम की झल मल पृष्ठ १४१

२१ंगो वंद मश्र कहानी समग्र भाग- ३ नए सरे से पृ३००

२२ क्षमा गोस्वामी परिवार में सौहार्द पृ ११

२३ गो वंद मश्र हुजूर दरबार पृ२१